RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-09
September-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

भास के 'प्रतिमानाटक' नाटक में नाट्य–सधियाँ

Dharam Singh

Assistant Professor, Deptt. of Sanskrit, Govt. College Bhattu Kalan Distt. Fatehabad (Hry.)

भास संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार हैं। इनके जन्म के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती है। इन्हें नाटक के क्षेत्र में वही सम्मान प्राप्त है, जो साहित्य के क्षेत्र में वाल्मीकि को प्राप्त है। सन्–1912 ई० तक संस्कृत साहित्य में भास नाम से कोई नाटककार नहीं मिलता था। सन्–1907 ई० में टी० गणपति शास्त्री को इनके द्वारा लिखित 13 नाटक मिलें–जो इस प्रकार है–स्वप्नवासवदतम्, प्रतिज्ञा यौगंधरायण, दरिद्र चारूदत्त, अविमारक, प्रतिमा, अभिषेक, बालचरित, पंचरात्र, मध्यम व्यायोग, दूतवक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार तथा उरुभगं। सन् 1912 ई० में अनंतशयन संस्कृत ग्रंथावली, त्रिवेन्द्रम, से इन ग्रंथों का प्रकाशन किया गया। इन नाटकों में प्रतिमा नामक नाटक का विशेष स्थान है।

'प्रतिमानाटक' नामक नाटक का कथानक इस प्रकार है। इस नाटक में कुल सात अंक है। इस नाटक में राम के वनगमन से लेकर रावण वध तथा राम के राज्य–अभिषेक की घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है। जब भरत अपने ननिहाल से लौटते हैं, तो अयोध्या के देवकुल में वे अपने पूर्वजों की प्रतिमाएँ देखते हैं। वे इस देवकुल में महाराज दशरथ की प्रतिमा भी देखते हैं। इस प्रतिमा को देखकर वे अपने पिता महाराज दशरथ मृत्यु का अनुमान कर लेते हैं, क्योंकि प्राचीन काल में राजाओं के देवकुल होते थे तथा वहाँ पर राजा के दिवंगत परिजनों की प्रतिमाएँ स्थापित की जाती थी। जब भरत को महाराज दशरथ की प्रतिमा देवकुल में दिखाई देती है, तो वे उनकी मृत्यु के बारे में जान लेते हैं। इसी 'प्रतिमा' के आधार पर ही इस नाटक का नाम प्रतिमा नाटक पड़ा।

भास के नाटकों में नाट्य–शास्त्र के नियमों का अक्षरशः पालन नहीं किया गया क्योंकि भास के समय तक संस्कृत के लक्षण ग्रंथों की रचना नहीं हुई थी। परन्तु फिर भी उस समय तक संस्कृत नाटकों के लेखन की कुछ रूढ़ियाँ या पद्धतियाँ विकसित हो चुकी थी। प्रतिमा नाटक में भी न्यूनाधिक रूप में इन नाट्य–रूढ़ियों का प्रयोग मिलता है। इनमें से एक नाट्य रूढ़ि नाट्य–संधियाँ भी है।

आचार्य धनजंय ने अपने दशरूपक नामक ग्रंथ में पाँच प्रकार की संधियों का उल्लेख किया है। जब पाँच अर्थप्रकृतियाँ पाँच कार्यावस्थाओं के साथ मिलती हैं, जो इनके मेल से पाँच नाट्य–संधियों का निर्माण होता है।

पाँच अर्थप्रकृति– बीज, बिन्दू, पताका, प्रकरी तथा कार्य।
पाँच कार्यावस्था– आरम्भ यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति तथा फलागम।
पाँच नाट्य–संधियाँ– मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श, निवर्हण।

बीज नामक अर्थप्रकृति तथा आरम्भ नामक कार्यावस्था के मिलन के फलस्वरूप मुख संधि बनती है। बिन्दू नामक अर्थप्रकृति तथा यत्न नामक कार्यावस्था के संयोग से प्रतिमुख संधि का निर्माण होता है। इसी प्रकार पताका नामक अर्थप्रकृति तथा प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था के संयोग से गर्भ संधि बनती है। विमर्श संधि में प्रकरी नामक अर्थ प्रकृति तथा नियताप्ति नामक कार्यावस्था का संयोग विद्यमान रहता है। अन्तिम संधि निवर्हण संधि में कार्य नामक अर्थ प्रकृति तथा फलागम नामक कार्यावस्था का संयोग विद्यमान रहता है।

नाटककार भास के प्रतिमा नाटक में इन संधियों का प्रयोग इस प्रकार है–

1. मुख संधि– मुख संधि का लक्षण है–

मुखबीजसमुत्पत्तिर्नानार्थरस सम्भवा।
अंगानि द्वादशैतस्य बीजारम्भसमन्यात्।।[1]

मुख्य संधि में बीज नामक अर्थप्रकृति के साथ आरम्भ नामक कार्यावस्था का संयोग विद्यमान होता है। इस संधि के कुल 12 अंग होते हैं। प्रस्तुत नाटक में आरम्भ नामक कार्यावस्था इस प्रकार है। जब कैकयी राम के राज्याभिषेक के अवसर पर बाधा उत्पन्न करती है, तो यहाँ पर 'आरम्भ' नानमक कार्यावस्था है–

(ततः प्रविशत्मवदातिका वल्कलं गृहीत्वा)
अवदातिका–अहो अल्याहित्तत्। परिहासेनापीमं
वल्कलमुपनयन्त्या मयैतावद् भयमासीत्।।
किं पुनः लोभेन परधनं हरतः। हसितुमिवेच्छामि।
न खल्वेकाकिन्या हसितव्यम्।[2]

इसी प्रकार जब महाराज दशरथ राम को युवराज पद पर आसीन करना चाहते हैं, तो प्रतिहारी सूचना देता है कि इस राज्याभिषेक के लिए जल्दी करो। नाटक के इस अंश से ही 'बीज' नामक अर्थ प्रकृति का आरम्भ होता है।

इदानीं भूमिपालेन कृतकृत्याः कृताः प्रजाः।
रामाभिधानं मेदिन्यां शाशांकमभिषिंयताः।।[3]

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस प्रकार नाटककार भास ने बीज नामक अर्थप्रकृति तथा आरम्भ नामक कार्यावस्था के प्रयोग द्वारा मुख संधि का प्रयोग 'प्रतिनाटकं' नामक नाटक में किया है।

2. प्रतिमुख संधि– प्रतिमुख संधि इस प्रकार है–

लक्ष्यालक्ष्य तयोद्भेदस्तस्य प्रतिमुखं भवेत्।
बिन्दु प्रयत्नानुगभादगांन्यस्य त्रयोदशः।।[4]

अर्थात्–जहाँ पर उस बीज का कुछ लक्ष्य रूप में तथा कुछ अलक्ष्य रूप में उद्भेद होता है, उसे प्रतिमुख संधि कहा जाता है। इस संधि के कुल तेरह अंग होते हैं।

'प्रतिमानाटकं' नामक नाटक में बिन्दु नामक अर्थ प्रकृति इस प्रकार है। जब राम को वनवास दिया जाता है, तो राम के वियोग में दशरथ की मृत्यु हो जाती है। राम के बनवास के कथानक से लेकर दशरथ की मृत्यु तक सारा कथानक (द्वितीय अंक) बिन्दु नामक अर्थ प्रकृति है–

रामः अत्र मोहमुपगतस्तत्रभावान्। हन्त निवेदितम प्रभुन्वम्।
मैथिलि।
मंगलार्थेऽनया दत्तान वल्कलांस्तावदानय।
करोम्यन्यैंनृपैर्धर्मे नैवाप्तं नोपपादितम्।।[5]

'यत्न' नामक कार्यावस्था राम के वमनगमन के बाद घटित होती है। दशरथ की मृत्यु तक का वृतांत यत्न नामक कार्यावस्था है।

रामेणापि परित्यक्तो लक्ष्मणेन च गर्हितः।
अयशोभाजनं लोके परित्वक्तस्त्वयाप्यहम्।।[6]

प्रतिमा नाटक में 'बिन्दु नामक अर्थप्रकृति तथा 'यत्न' नामक कार्यावस्था का सफल संयोजन किया गया है। इन दोनों के संयोजन से यहाँ प्रतिमुख संधि का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

3. गर्भ संधि–आचार्य धनजंय ने गर्भ संधि का लक्षण इस प्रकार दिया है–

गर्भस्तु दृष्टनष्टस्य बीजास्यान्वेषणं मुहुः।
द्वादशांग पताका स्यान्न वा स्यात्प्राप्ति संभवः।।[7]

अर्थात्–गर्भ संधि में दिखलाई देकर खोए गए बीज का बार–बार अन्वेषण किया जाता है। इसमें पताका नामक अर्थ प्रकृति कहीं होती है तथा कहीं पर नहीं होती, किन्तु प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था अवश्य होती है। इस संधि के कुल बारह अंग होते है।

नाट्य–शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार नाटक में पताका नामक अर्थ प्रकृति की अनिवार्यता नहीं है। 'पताका' वह होती है जो मुख्य कथा के साथ दूर तक चलती है। नाटककार भास ने प्रतिमानाटकं नामक नाटक में भरत की कथा को पताका के रूप में वर्णित किया है। नाटक के तीसरे अंक में भरत स्वयं राजसिंहासन पर नहीं बैठते, अपितु वे राम की चरण पादुकाओं को राजसिंहासन पर आसीन करते हैं। भरत का उपरोक्त कार्य प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था है।

पादोपभुक्ते तव पादुके म एते प्रयच्छ प्रणताय मूर्ध्वा।
यावद् भवानेष्यति कार्य सिद्धि तावद् भविष्याम्यनयोविधेया।[8]

नाटककार भास ने भरत की कथा को पताका बनाकर तथा प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था का समुचित संयोजन करके गर्भ संधि का अक्षरशः पालन किया है।

4. विमर्श संधि– आचार्य धनजंय ने विमर्श संधि को इस प्रकार परिभाषित किया है–

क्रोधेनावमृशेधत्र व्यसनाद्वा विलोभनात्।
गर्भ निर्भिन्नबीजर्थः सोऽवमर्शः इति स्मृतः।[9]

अर्थात्–जहाँ पर क्रोध से, व्यसन से अथवा प्रलोभन से फलप्राप्ति के विषय में विमर्श किया जाता है, तथा जिसमें गर्भसंधि द्वारा निर्भिन्न बीजार्य का सम्बंध दिखाया जाता है, वह विमर्श या अविमर्श संधि कहलाती है।

'प्रतिनाटकं' नामक नाटक में जटायु के वृतांत को प्रकरी के रूप में वर्णित किया गया है। 'प्रकरी' का मूल कथा के साथ कोई सम्बंध नहीं होता तथा यह मूल कथा के साथ दूर तक चलती भी नहीं है। अतः यहाँ जटायु की कथा प्रकरी नामक अर्थप्रकृति है।

विमर्श संधि में नियताप्ति नामक कार्यावस्था का संयोजन होता है। इसमें आशा तथा निराशा का द्वंद्व भाव विद्यमान रहता है। जब रावण सीता का हरण कर लेता हैं, तो राम लंका पर आक्रमण करता है और रावण का वघ कर देता है, तो यह कथानक नियताप्ति नामक कार्यावस्था के अन्तर्गत समाहित है।

5. निर्वहण संधि–

आचार्य धनजंय के अनुसार निर्वहण संधि का लक्षण इस प्रकार है–

बीजवन्तो मुखाद्यार्था यथायथम्।
ऐकार्थ्यमुपनीयते यत्र निर्वहणं हि तत्।।[10]

अर्थात्–जहाँ बीज से सम्बंध रखने वाले मुख संधि आदि में अपने–अपने स्थान पर बिखरे हुए अर्थों का एक मुख्य प्रयोजन के साथ सम्बंध दिखाया जाए, वहाँ निर्वहण सन्धि होती है। निर्वहण संधि में 'कार्य' नामक अर्थप्रकृति तथा फलागम नामक कार्यावस्था का संयोजन किया जाता है। नाटककार भास ने प्रतिमा नाटक में इनका सुन्दर संयोजन किया है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

जब राम रावण का वध करने के पश्चात वापिस अयोध्या लौटते हैं तो भरत उसे अयोध्या का राज्य सौंप देते हैं।

भरतः–अधिगतनृपशब्दं धार्यमाणातपत्रं
विकसितकृतमौलिं तीर्यतोयाभिषिक्तं।।[11]

राम जब राजसिंहसन पर बैठते हैं, तो उसका सिंहासन पर बैठना ही फलागम नामक कार्यावस्था है।

स्वर्गेऽपि तुष्टिमुपगच्छ विमुंच दैन्यं
कर्म त्वयाभिलषितं मयि यत् तदेतत्।
राजा किलास्मि भुवि सत्कृत भारवाही,
धर्मेण लोक परिरक्षणमभ्युपेतम्।।[12]

नाटककार भास ने कार्य नामक अर्थप्रकृति तथा फलागम नामक कार्यावस्था के सुन्दर संयोजन द्वारा निर्वहण संधि का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि नाटककार भास ने पाँचों कार्यावस्थाओं (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियतप्ति तथा फलागम) एवं पाँच अर्थ प्रकृतियों (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य) के सुन्दर संयोजन से क्रमशः मुख संधि, प्रतिमुख संधि, गर्भ संधि, विमर्श संधि तथा निर्वहण संधि का नाट्य–शास्त्रीय विधान प्रस्तुत किया है। इनका 'प्रतिमानाटकं' नामक नाटक नाट्य–शास्त्र के नाट्य–संधि नामक नाट्य–रूढ़ि पर खरा उतरता है।

नाटककार भास ने केवल एक 'प्रतिमा' के आधार पर प्रतिमानाटकं नामक नाटक की रचना की। इस संक्षिप्त से कथानक को सम्पूर्ण नाट्य–शास्त्रीय संधियों में निबद्ध करना उनके अद्भुत नाटकीय कौशल का परिचायक है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची–

1. धनजंय, दशरूपक, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, 2003, 1/37, पृ०–26
2. भास, प्रतिमानाटकं, आ० रामचन्द्र मिश्र (टीकाकार), चौखम्बा संस्कृत सीरीज, पृ०–9
3. –वही–पद्य–1/4, पृ०–8
4. धनजंय, दशरूपक, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, 1/51, पृ०–38
5. भास, प्रतिमानाटकं, आ० रामचन्द्र मिश्र (टीकाकार), चौखम्बा संस्कृत सीरीज, पृ०–39
6. –वही–पृ०–39
7. धनजंय, दशरूपक– साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, 1/66, पृ०–50
8. भास, प्रतिनाटकं, आ० रामचन्द्र मिश्र (टीकाकार), चौखम्बा संस्कृत सीरीज, तृतीय अंक, पृ०–121
9. धनजंय, दशरूपक, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ 1/81, पृ०–63
10. –वही– 1/96, पृ०–81
11. भास, प्रतिमानाटकं, आ० रामचन्द्र मिश्र (टीकाकार), चौखम्बा संस्कृत सीरीज, पृ०–181
12. –वही– पृ०–181

© RRIJM 2015, All Rights Reserved